International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 13 Issue 11 || November 2024 || PP. 113-115

भारतीय कला का ऐतिहासिक भौगौलिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ बीना दीक्षित
प्रोफेसर ललित कला विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी

आशीष कुमार
ललित कला विभाग

सार
प्रागैतिहासिक मानव द्वारा पत्थर के औजार बनाने से ही कला की शुरूआत हो जाती है। प्रारम्भ में मानव द्वारा निर्मित कलात्मक पुरावशेष, शैलगृहों व गुफाओं में भित्ति चित्रों के रूप में परिलक्षित होती है। सिंधु संस्कृति के समय इसका विकास शुरू हुआ जो मौर्यकाल व गुप्तकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। वास्तु, शिल्प, मूर्ति, चित्र, कांस्य प्रतिमा, मृण्मयी मूर्तियाँ, मृदभाजन, सिक्के, दन्तकर्म, काष्ठकर्म, मणिकर्म, स्वर्ण व रजत कर्म आदि के रूप में भारतीय कला की सामग्री भरपूर मात्रा में पाई जाती है। अजन्ता ऐलोरा की गुफाएं तक्षण कला का एक अद्भुत नमूना है। कुषाणवंशीय शासक कनिष्क के काल में गांधार व मथुरा कला का बहुत अधिक विकास हुआ। कला की महता ऐतिहासिक रूप से बहुत अधिक है। इससे हमें प्रागैतिहासिक तथा आद्यऐतिहासिक जीवन के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है। इसके अलावा तिथि–निर्धारण, प्राप्ति स्थान व ऐतिहासिक सबंधों के निर्धारण, धार्मिक जीवन के स्त्रोत व आर्थिक व सामाजिक जीवन के बारे में कला से हमें बहुत जानकारियाँ प्राप्त होती है। इतिहास की संरचना साक्ष्य सापेक्ष होती है। इतिहासकार अतीत की घटनाओं का स्वयं साक्षी नहीं होता अतः वह पुरावशेषों से ज्ञात तथ्यों के आधार पर ही इतिहास का निर्माण करता है। प्राचीन भारतीय इतिहास के सन्दर्भ में साहित्यिक परम्परा तथा भौतिक परम्परा के अवशेष समान रूप से महत्वपूर्ण है। भौतिक परम्परा में पुरातातविक साक्ष्य अपने अविकल रूप में प्राप्त होने के कारण अधिक विश्वसनीय है। कला तथा स्थापत्य महत्वपूर्ण पुरावशेष है। वो विभिन्न कालों के सांस्कृतिक इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

भूमिका

भारतीय कला भारत वर्ष के इतिहास, विचार, धर्म, तत्वज्ञान और संस्कृति का दर्पण है। भारतीय जनजीवन की व्याख्या तथा अभिव्यक्ति कला के माध्यम से हुई है। वास्तु शिल्प, मूर्ति,

चित्र कॉस्य प्रतिमा, मृण्मयी मुर्तियॉं, मृदभाजन, सिक्के, दन्तकर्म, काष्ट कर्म, मणिकर्म, र्स्वण रजत कर्म आदि के रूप में भारतीय कला की सामग्री भरपूर मात्रा में पाई जाती है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर हडप्पा संस्कृति, बुद्वकाल, मौर्यकाल, शुंग–सातवाहन काल, गुप्तकाल, राजपूतकाल, सल्तनतकाल तथा मुगलकाल तक के सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त करने में कला महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रागैतिहासिक मानव द्वारा पत्थर के औजार बनाने से ही कला की शुरूआत हो जाती है। प्रारम्भ में मानव द्वारा निर्मित कलात्मक पुरावशेष शैलगृहो व गुफाओं में भिति चित्रों के रूप में मिलते हैं। नव पाषाण काल में उसकी कला मृदभाण्डो व गृह निर्माण के रूप में परिलक्षित होती है। आगे चलकर कला उसके सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन में समाहित हो गई। काल विभाजन के आधार पर भारतीय कला को निम्नलिखित भागों में बॉंटते हैं :–

(1) प्रारम्भिक युगः– प्रागैतिहासिक काल की कला

(2) आद्ययुगः– सिंधु घाटी से नन्दवंश के पूर्व की कला

(3) मध्ययुग– मौर्य युग से हर्ष के काल तक की कला

(4) मध्यकाल – हर्ष के बाद की कला।

भारतीय कला प्रागैतिहासिक काल में अपनी प्रारम्भिक अवस्था में थी। सिंधु संस्कृति काल में उसका विकास शुरू होता है। मौर्य काल से हर्ष के समय तक यह अपने चमोत्कर्ष पर पहॅुच गई। मौर्य, शुंग, काव्य व सातवाहन काल की कला के विकास के दर्शन सारनाथ, भरहुत,

सॉ ंची, बौद्ध गया, अमरावती तथा भान्जी आदि पुरास्थला ें पर हा ेते ह ैं। इसके बाद भारतीय कला प्रारम्भ दूर–दूर तक विद ेशा ें में भी फैल गया। प्राचीन भारतीय कला के अध्ययन के लिए पुरातातविक सामग्री की महता सर्वाधिक है।

भारतीय कला के तीन रूप प्रचलित ह ैं – स्थापत्य कला, मुर्तिकला तथा चित्रकला। प्रागैतिहासिक मानव की कलात्मक प्रगति का प्रमाण उस काल की पाषाणकृतियों, भिति–चित्रा ें तथा मृणम ुर्तियों के रूप में मिलता ह ै। बौद्ध वास्तुकला आ ैर मुर्तिकला के विकास में प्राचीन स्तुपा ें के नमून े, विहारा े के खण्डहर, गुहा, चैत्यग्रह, बुद्ध प्रतिमाआ ें जा े कुषाणकाल में गान्धार व मथ ूरा शैली में निर्मित ह ैं। बौद्विस्त्वो की मुर्तियॉ ं, स्तूप मुर्तियॉ ं आदि महत्वपूर्ण भ ूमिका निभाती ह ै। ये हमार े अतीत के गौरव का े प्रतिबिंबित करते ह ैं।

ऐतिहासिक स्त्रोता ें के रूप म ें कला – प्राचीन भारतीय सामाजिक, धामि र्क, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर कला महत्वपूर्ण प्रकाश डालती ह ै।

प्रागैतिहासिक तथा आद्य ए ेतिहासिक जीवन का ज्ञान :– भा ेपाल के समीप भीमबैठका में स्थित प्रागैतिहासिक शैल गृह का कला के क्ष ेत्र में विशेष महत्व ह ै। इस शैल गृह के चित्र तात्कालिक मानव के जीवन की रा ेचक जानकारी प्रदान करत े ह ैं। इनम ें प्रजनन कि्रयाआ ें से सम्बंधित चित्र मानव की ज्ञान ेन्द्रिया ें की शक्ति का े दशा र्ते ह ैं। हिरण के पेट में हाथी का चित्र उसकी कल्पना शक्ति का े दशा र्ते ह ैं। मानव के साथ चलता कुत े का चित्र उसके द्वारा सुरक्षा के लिय े उस े पालतु बनाने का द्योतक ह ै। तीर तथा भालो द्वारा जानवरा ें का शिकार करत े दशा र्या गया ह ै। अनेक मनुष्यों का एक प ंक्ति में नृत्य मुद्रा मे ं दर्शाया जाना उनक े साम ूहिक जीवन का े दशा र्ता ह ै। एक चित्र मे ं मनुष्यों का े जंगली सूअर स े डर के भागते ह ुये तथा दूसर े में पशुआ ें का मनुष्य का े देखकर भागते ह ुये चित्र अंकित ह ै। हड़प्पाकालीन मृद्धभाण्डो पर अंकित चित्रा ें म ें वनस्पति व जीवजन्तुआ ें तथा ज्यामितिय चित्रा ें की प्राधानता ह ै। इस काल की प्रस्तर मूर्तियॉ ं, मृणम ुर्तियॅा, धातुआ ें की मूर्तिया ं, मिट्टी की मृणम ूर्तियॉ ं जिनमें मातृदेवी की मूर्तियॉ ं तथा वृषभ की मृणमूर्तिया सबसे ज्यादा प्रमुख ह ै। इस काल की मुहरा ें पर भी मूर्तिकला के विकसित रूप के दर्शन हा ेते ह ैं। अब तक इस काल की 2000 के लगभग मुहरें प्राप्त हा े चुकी ह ैं। इस काल के बहुमूल्य पत्थरा ें तथा मिट्टी के विभिन्न प्रकार के मनके भी कला की दृष्टि से अद्भ ूत ह ैं। इस काल के मृदभा ंड भी कला के उत्कृष्ट रू्प के दर्शन कराते ह ैं। इस काल की खिला ैना गाड़िया जा े मिट्टी की बनी ह ैं कला के दर्शन कराती ह ैं। ये बैल का प्रया ेग यातायात में करन े की द्यौतक ह ै। पशु तथा पक्षी प्रारम्भिक काल स े ल ेकर बाद म ें भी कला के

रूप मे ं प्रसिद्व रह े। मा ैर्यकालिन मुर्तिकला व तक्षणकला में पशु–पक्षियों का अंकन पौराणिक कल्पनाआ ें के अनुरूप प्राप्त हा ेता ह ै।

तिथि निर्धारक के रूप में कला :–

पुरावस्तुआ ें का काल निर्धारण प्रायः उनकी स्थिति के आधार पर किया जाता ह ै। स्तूप, मन्दिर, शीलापठ आदि पर उत्कीर्ण लेख सम्ब ंधित सामग्री के काल की सूचना देता ह ै। इस साक्ष्य क े अभाव में शैली ही समय का संकेत देती ह ै। पुरातत्व की खुदाई में प्राप्त सामग्री जैसे मुद्रा, मृतपात्र, खिला ैने आदि का े पुरास्तरीय स्तरा ें के आधार पर जॉच कर उनका समय निशिचित करते ह ैं। हडप्पा कालिन मृदभाण्डो पर अनेक प्रकार के चित्र उकेर े गये ह ैं। जिनकी तकनीकि आधार पर अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त हा ेती ह ैं।

प्राप्ति स्थान तथा ऐतिहासिक सम्ब ंधा े क े निधा र्रण में सहायक –

प्राप्ति स्थान आ ैर तिथिक्रम ये दा ेना ें कला वस्तु के अध्ययन म ें सहायक हा ेते ह ैं। मूर्तिया ें में प्रया ेग पत्थर से मूर्तिया ें की प्राप्ति स्थान पर प्रस्तर की उपलब्धता के स्थान के मध्य व्यापारिक तथा सांस्कृति सम्बंधा ें का े निश्चय करन े में सहायता मिलती ह ै। उदाहरण के लिए सि ंधु सभ्यता म ें किरथर पहाड़ी की खादाना ें का सफेद खड़िया पत्थर काम में लाया जाता था। मा ैर्यकाल की मुर्तिकला पर इरानी प्रभाव के दर्शन हा ेते ह ैं। इस काल म ें चुनार की खादाना े का हल्के गुलाबी र ंग का ठा ेस बलवा पत्थर काम में लाया गया। मथ ूरा कला में मजिठी र ंग का चित्रीदार बलवा पत्थर ;सिकरी व व्यानाद्ध प्रयुक्त किया गया।गा ंधार कला में नीली झलक का स्लेटी पत्थ प्रया ेग किया गया। गुप्त काल में स्थानीय लल्छा ेह पत्थर, पाल युग में काले र ंग का गयावाल तेलीय पत्थर, चालुक्य काल में पीले र ंग का बलवा पत्थर तथा अमरावती व नार्गाज ुनी का ेडा आदि स्तूपा ें म ें श्व ेत खड़िया पत्थर का प्रया ेग किया गया। उड़ीसा के मन्दिरा ें में राजा रनिया पत्थर, कुरथा पत्थर, ठुसारया पत्थर, सैलखड़ी तथा संगमरमर का प्रयोग किया गया। इस प्रकार कलात्मक सामग्री से स्थानीय भ ेदा ें का निर्द ेश मिल जाता ह ै।

धामि र्क जीवन के स्त्रोत के रूप में मूर्ति कला :–

धामि र्क रूप से मा ैर्य काल सहिष्णुता का काल था। बुद्व मुर्तिया ें के साथ यक्षा े व नागा ें की मूर्तिया ें का परिचय भरह ुत, सांची तथा मथ ूरा कला में मिलता ह ै। अशा ेक के काल म ें बनी विभिन्न पशु मुर्तिया ें का सम्भवतः बा ेद्व धर्म से सम्बंध था। उसका वैशाली का सिंह शीर्ष स्तम्भ लोरियानन्दनगढ़ का सिंह शीर्ष स्तम्भ, बिहार के चम्पारन जिल े मे ं स्थित रामपुरवा स्थित सिंह शीर्ष स्तम्भ, संकिशा का गज शीर्ष युक्त स्तम्भ, सारनाथ सिंह शीर्ष स्तम्भ, सांची का सिंह शीर्ष स्तम्भ, धा ैली की गज मुर्ति आदि का राजकीय कला के रूप में सम्भवतः धामि र्क महत्व था। इन पशुआ ें का बुद्व के जन्म स े ल ेकर परिनिर्वाण तक की महत्वपूर्ण घटनाआ ें स े सम्बंध बताया जाता ह ै। इसके इलावा इस काल की मथ ूरा कला की प्रखम गॉ ंव की यक्षमुर्ति, दिदारग ंज की यक्षिणी मूर्ति तथा पटना स े प्राप्त दा े यक्षमूर्तिया ें का भी धामि र्क महत्व ह ै। जैन धर्म से सम्ब ंधित लोहानीपुर की मस्तकहीन मानव मृणम ूर्तिया ं प्रमुख ह ैं। मथ ूरा, अहिच्छत, का ैशाबी, मसा ेन,

लुम्बीनि, बौद्व गया, सारनाथ, राजग ृह, वैशाली, श्रावस्ती इस काल के मुख्य धामि र्क मूर्तिकला क े केन्द्र थ े। महात्मा बुद्ध के जीवन सम्ब ंधित अनेक जातक कथाआ ें का उत्कीर्ण इस काल के स्तूपों पर मिलता ह ै। अजन्ता एलौरा की गुफाए तक्षण कला का एक अदभ ुत नमूना ह ै। तीसरी शताब्दी ई0 पू0 स े लेकर 12वीं शताब्दी तक महात्मा बुद्ध तथा बौद्धिसत्वों स े सम्बंधित अन ेक चित्रा ें तथा पौराणिक पशुआ ें का अंकन

इन गुफाओ ें में उकेरा गया है।

कुषाणवंशीय शासक कनिष्क के काल में गा ंधार कला का विकास ह ुआ जिनमें महात्मा बुद्व की मूर्तिया ें की शैली ता े यूनानी थी लेकिन इसकी आत्मा भारतीय थी। इस काल म ें मूर्तिया ें का े अनेक आभ ूषणा ें स े अल ंकृत किया गया। बुद्व तथा बोधीसत्वा ें की मूर्तिया ें के अलावा मथ ूरा शैली में जैन म ूर्तिया ें, विष्णु, सूर्य, कुबेर, नाग, यक्ष तथा स्त्री मूर्तिया े ं का निर्माण किया गया। मथ ूरा लुम्बिनी, बुद्धगया, कुशीनगर, सांची, अजन्ता, अमरावती, नागाजु र्नीका ेड़ा, काशी आदि मूर्तिकला के मुख्य क ेन्द्र थ े। कुषाणा ें के सिक्का े पर अनेक य ूनानी देवी–द ेवताआ ें के चित्र अंकित ह ैं। गुप्त काल में बुद्व, बराह अवतार, गा ेवरधनधारी कृष्ण मूर्ति, शेषशायी, विष्णु, सूर्य, कार्तिक ेय, बलदेव, लक्ष्मीनारायण, शिवजी, शिवलिंग, पार्वती, महावीर स्वामी तथा मकरवाहिनी ग ंगा आदि देवी देवताआ ें की मूर्तिया े ं का निमा र्ण किया गया। शिव की अध र्नारीश्वर रूप का निर्माण इसी काल में ह ुआ। इस काल के सिक्का े पर अन ेक देवियो ें के चित्र अ ंकित ह ैं।

गुप्ता ेत्तर काल में भी इन देवी–देवताओ ें की मूर्तिया ें का निर्माण हा ेता रहा लेकिन पत्थर की जगह सोना, चा ंदी, ताम्बा, रा ंगा, पीतल आदि का प्रया ेग बढ़ा। इस प्रकार कला धार्मिक इतिहास के बार े में महत्वपूर्ण स्त्रोत ह ै।

आर्थिक जीवन के स् त्रा ेत के रूप म ें कला :–

मूर्तिया े तथा चित्रा ें स े हमें आर्थिक जीवन के बार े में भी पता चलता ह ै। इन पर कपड़ो के विभिन्न स्वरूप मिलत े ह ैं। मा ेहनजोदड़ा े स े प्राप्त मूर्तिया ें क े त्रिपत्तिया ॅ कपड़े का अंकन इसका अच्छा उदाहरण ह ै। मृद्धभा ंडों पर चटाई की डिजाईन बुनाई के प्रमाण ह ै। ता ंबा तथा अन्य धातुओ ें की मूर्तिया ॅ उन्नतिशील आर्थिक व्यवस्था के दर्शन कराते ह ैं। मूर्तिया े पर आभ ूषणा ें का अंकल भी इसका उदाहरण ह ै। मा ैर्य कालीन, शुंगकालीन, कुषाणकालीन, गुप्तकालीन मूर्तिया ें स े हमें वस्त्रों क े प्रकार कशीदाकारी, दस्तकारी वस्त्रा ें की सज्जा तथा रूपर ेखा का ज्ञान हा ेता ह ै। सम्भतः मा ैर्यकाल में मूर्तिकाल का विकास उद्योग के रूप में हा े चुका था। इस काल म ें मूर्तिकला की नई तकनीक का विकास ह ुआ जा े आर्थिक उन्नति का े दर्शाता ह ै। कुषाण काल

में मूर्तिकार राज्य द्वारा संरक्षित हा ेते थ े। मूर्तिकला पर यूनानी प्रभाव विदेशी संबधा ें का े दशा र्ता ह ै। गुप्तकाल में कला का काफी विकास ह ुआ। इस काल मे ं बने मन्दिरा ें, गुफाओ ें तथा चैत्या ें से कला क े उत्कर्षट रूप के दर्शन हा ेते ह ैं। मा ैर्यकाल से ही गुफाओ ें तथा चैत्यों विहारा ें व मन्दिरा ें के लिय े दान दिये जात े थ े जा े आर्थिक समृद्दि के द्योतक ह ैं। गुप्तकाल में सोने के सिक्क े काला के उत्कृष्ट नमूने हा ेने क े साथ आर्थिक समृद्वि के द्योतक ह ैं। अजन्ता तथा ऐलौरा की गुफाएं मूर्तिकाल की उत्कृष्ट निधि ह ैं।

सामाजिक जीवन के स्त्रोत के रूप में कला :–

भारतीय मूर्तिकला की अपनी एक विशेषता रही ह ै कि वह लोकजीवन का े परिभाषित करते ह ुए चलती ह ैं। कला के द्वारा मनुष्य के कार्य–कलापो का चित्रण किया गया ह ै। वृक्षलता, पुष्प, फूल, वनस्पति, पशु–पक्षी, धामि र्क व्यक्तिया ें के जीवन का अंकन, राजा का एश्वर्य, राज सिंहासन, राज लक्ष्मी, छत्र, चतुर ंगिणी सेना, उनके उत्सव, यात्रा स ंगीत, नृत्य आदि का अंकन मिलता ह ै। प्रागैतिहासिक शैल गृहा े में तात्कालिक मानव के सम्पूर्ण जीवन का विवरण मिलता

ह ै। भीमबैठका के शैलग ृह इसका अच्छा उदाहरण ह ै। हड़प्पा से मिली ताम्ब े की मूर्ति नृत्य प्रवृति की द्योतक ह ै। प्रारम्भ से ही नारी का भारतीय कला में विशिष्ट स्थान रहा ह ै। भारतीय वेषभ ूषा, क ेश विन्यास, आभूषण, आसन सामग्री चित्रकला तथा शिल्पकला में व्यापक रूप से मिलते ह ैं। आदमगढ, प ंचमढ़ी, भीमबैठका आ ैर काबरा की शैलग ृहो से मानवीय काया का रूप लहरदार खड़ी र ेखाओ ें के रूप में मिलता ह ै। मा ेहनजोदड़ो की मूर्ति से वस्त्रा ें के बार े में पता चलता ह ै। विभिन्न प्रकार के मृदभा ंडो स े आर्थिक स्थिति व खान–पान का पता चलता ह ै।

निष्कर्ष

हडप्पा सभ्यता से क ेशविन्यास, स्त्री मूर्तिया ें स े बाज ूबन्द, चुड़ियॉ ं, मालाओ ें, कर्ण आभ ूषणा ें आदि का ज्ञान हा ेता ह ै। कुषाणकालीन सिक्का े पर गा ंधारकला की वेषभ ूषा के दर्शन हा ेते ह ै। मथ ूरा शैली की मूर्तिया ें में महात्मा बुद्व का े महीन वस्त्र पहन े दिखाया गया ह ै। कपिशा से प्राप्त गान्धार शैली की मूर्तिया े ं में स्त्री के हाथा ें प्रसाधिका का दिखाई गई। गुप्त कला में पुरूष की वेशभ ूषा मे ं धा ेती तथा स्त्री की व ेशभ ूषा मे ं साड़ी का पता सिक्का ें से चलता ह ै। इस प्रकार कला से सामाजिक जीवन का बोध हा ेता ह ै।

संदर्भ

- वेंडी डोनिगर और ब्रायन के. स्मिथय सशक्तिकरण, 2021, पेंगुइन चालिक्स,
- वीआर मेहताय सामाजिक नींवरू एक व्याख्या (2018) मनोहर प्रकाशन
- कुमुद रंजन सिंहय सामाजिक सशक्तिकरण – अरिहंत प्रकाशन मनु स्मृति
- डॉ. एसआर मायनेनी, राजनीति सशक्तिकरण पुनर्मुद्रणरू 2020
- यू.एन. घोषालयसामाजिक इतिहास, 2020